ISSN:2583-8849



डॉ. अनुश्री राठौड़ 'चौहान'
उदयपुर, राजस्थान

टूटती वर्जनाएँ

बिजली की तरह पूरे गाँव में खबर फैल गई कि सलोनी अपनी दोनों बेटियों के साथ ससुराल से लापता है । ससुराल व मायके वाले अपने-अपने स्तर पर उसको तलाष रहे थे और लोग अटकले लगा रहे थे ।

"कहाँ गई होगी ? पाँच दिन पहले ही तो मायके आई थी । कितनी उदास थी। शायद ससुराल में कोई दुख होगा ? अरे कैसा दुख ? दामादजी ने स्वयं पसंद करके विवाह किया था वो भी बिना दहेज के, मुझे तो लगता है विवाह से पहले कहीं कोई चक्कर था। हाँ, लगता तो कुछ ऐसा ही है, देखा नहीं, शादी से पहले कैसी हँसती खिलखिलाती रहती थी और शादी के बाद तो उसे मुस्कराते भी नहीं देखा। लगता है, अब भाग गई है अपने प्रेमी के साथ।

अरे नहीं, ऐसी तो नहीं थी। मैने तो सुना था कि बेटा नहीं होने की वजह से दुखी थी। दो बेटियाँ तो पहले ही गोद में हैं ही, एक गिरवा चुकी थी और इस बार भी गर्भ में बच्ची ही थी। हो सकता हैं इसी से दुखी होकर कहीं किसी कुएँ -बावड़ी में.....।

जितने मुहँ उतनी बातें।

उसके साथ क्या हुआ ? वो कहाँ गई होगी ? किस हाल में होगी ? ऐसे ही कई प्रष्नों की एक लम्बी फेहरिस्त मेरे दिमाग मे भी थी ।

बचपन की सहेलियाँ थी हम , साथ खेल कर बड़ी हुई और एक ही दिन शादी के बँधन में बँध कर गाँव से विदा हो गई । उसके बाद तो जब वो मायके आती, मैं ससुराल में होती और मैं मायके आती तब वह ससुराल होती । बीते चार सालो मे मुष्किल से चार या पाँच बार हमारी मुलाकात हुई होगी । इसी बीच सलोनी दो जुड़वाँ बेटियों की माँ बन गई और मेरी गोद भी एक बच्ची से भर गई ।

उन्हीं मुलाकातों में मैंने महसूस किया कि सलोनी अब पहले वाली सलोनी नहीं रह गई थी, जिसका बोलना-बतियाना , हँसना-खिलखिलाना सबका मन मोह लेता था। उदासी और परेषानी तो उसके पास भी नहीं फटकती थी । कितनी मस्त और चुलबुली लड़की थी वो। न शर्म-न संकोच, हर वक्त मस्ती, अल्हडपन, शरारतें कभी गंभीर तो रह ही नहीं सकती थी ।

वही सलोनी अब नपे-तुले शब्दों में बातें करने लगी थी। बहुत जरूरी होने पर मुस्करा देती, खिलखिला कर हँसना तो जैसे भूल ही गई। मैं समझ नहीं पा रही थी कि विपरीत परिस्थितियों में भी हालात से समझौता करके

जिन्दादिली से जिन्दगी जीने वाली इस लड़की को अचानक क्या हो गया ? बहुत पूछने पर एक बार उसने बताया कि उसके ससुराल वालों को उसकी ऐसी बचकानी हरकतें पसंद नहीं हैं।

लेकिन बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी , इसका अहसास तो मुझे तब हुआ जब उसके लापता होने के तीन दिन बाद मुझे उसका पत्र मिला । पते की लिखावट से ही मैं पहचान गई थी कि पत्र सलोनी का है । जिसकी एक खबर पाने के लिए न जाने कितने ही लोग परेषान थे; उसके हाथ का लिखा पत्र मेरे हाथ में था ।

मैं पढ़ रही थी और उसमें लिखा एक-एक शब्द मेरे दिल पर हथौड़ा बन कर वार कर रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे वह सिर्फ सलोनी की ही नहीं उन तमाम लड़कियों की दिल की व्यथा है जो इस समाज में अपना एक स्वतंत्र वजूद तलाश रही हैं। जो अनन्त आसमान में ऊँची उड़ान भरना चाहती हैं मगर सामाजिक मर्यादाओं के पिंजरे में कैद हैं। मैं अविरल पढ़े जा रही थी।

“अवनि,

न जाने क्यों हम लड़कियों के अपने घर नहीं होते। बचपन से ही यह बात हमारे मन में ठूँस-ठूँस कर भर दी जाती है कि मायका हमारे लिए पराया घर है और एक दिन हमें इसे छोड़ कर जाना है। माँ-बाप भी तो हमें पराई अमानत समझ कर ही पालते हैं।

फिर एक दिन किसी नितांत अजनबी के हाथ में हमारे जीवन की डोर सौंप दी जाती है और हम इस आषा के साथ चुपचाप उसके पीछे चल देती है कि आज हम अपने घर जा रही हैं। लेकिन वो कैसा अपना घर ,जहाँ न सिर उठाकर चल सको; न खुलकर हँस सको और न ही दो शब्द भी अपनी मर्जी के बोल सको।

हकीकत तो यह है अवनि कि हम लड़कियों की तो जिन्दगी भी हमारी अपनी नहीं होती है। जन्म होता है तो पिता की मर्जी से , यदि वह कोख में ही न मार डाले और जिन्दगी जीती हैं तो पति की मर्जी से, जैसे वो चाहे, जिस तरह से उनको पसंद हो, अपनी मर्जी से तो हम एक साँस तक नहीं ले सकती ।

हम भी इंसान हैं, हमारी भी अपनी सोच होती है, सपने होते हैं। हमारे सीने में भी एक दिल धड़कता जिसमें कुछ भावनाएँ होती हैं, कुछ अरमान होते हैं । फिर ऐसा क्यों होता है अवनि कि हमारे जीवन के सारे तौर-तरीके पुरुष तय करते हैं और जब भी समझौते की बारी आती है हमें ही झुकना पड़ता है। क्यों अवनि, क्यों, आखिर क्यों ?

एक मेधावी छात्रा होने के बावजूद ग्यारहवीं के बाद मेरी पढ़ाई छुड़ा दी गई , सिर्फ इसलिए, क्योंकि बारहवीं में दो बार फेल होने बाद मेरे होने वाले पति ने पढ़ाई छोड़ दी थी और वह नहीं चाहते थे कि उनकी पत्नी उनसे ज्यादा पढी़-लिखी हो। पढ़-लिख कर कुछ बनना चाहती थी मैं, पढ़ाई छूटने पर मेरे सारे सपने टूट गए मगर मैं खामोश रही।

पहली बार एक साथ दो जुड़वाँ बेटियाँ होने पर ससुराल वालों की नाराजगी को भी मैंने चुपचाप बर्दाश्त कर लिया। यहाँ तक कि लड़के की उनकी महत्वाकांक्षा के कारण मैंने अपनी एक

अजन्मी मासूम बच्ची का भी खामोषी के साथ कोख में ही कत्ल हो जाने दिया। लेकिन इस बार भी जब उन्होनें मेरी बच्ची को जन्म से पहले मार डालना चाहा तब मैने अपनी खामोषी तोड़ी, विरोध किया तो वे जोर जबरदस्ती करने लगे, यातनाएँ देने लगे।

परेषान होकर जब मैं मायके आई तो माँ और बाबूजी ने यह कहते हुए वापस लौटा दिया कि षादी के बाद लड़कियों को वही करना चाहिए जो पति चाहते हो । सभ्रांत घर की बहू-बेटियों को घर की मान मर्यादा का ख्याल रखना चाहिए । वे पिता के घर से डोली में बैठ कर विदा होती हैं और पति के घर से अर्थी में लेट कर, उन्हें इस तरह घर की दहलीज लाँघ कर मर्यादाओं का उल्लंघन करने का अधिकार नहीं होता है।

तो क्या, सारी मर्यादाएँ हम लड़कियों के लिए ही बनी हैं ? आखिर क्यों अवनि, क्यों सदियों से समाज का पुरुष वर्ग हमारा शौषण कर रहा है और हम चुपचाप उसे बर्दाष्त कर रही हैं ? क्यों एक औरत ही नहीं चाहती कि उसके घर में बेटी का जन्म हो ? क्यों मेरी सास ने धोखे से मेरे खाने में गर्भपात की दवा मिला कर मुझे खिला दी, जिससे मेरी बच्ची ने कोख मे ही तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया।

अवनि, सच तो यह है कि आज औरतें स्वयं ही अपना अस्तित्व मिटाने पर इसलिए तुली हैं क्योंकि उनकी परवरिष ही इस तरह से की जाती है कि बचपन से ही यह बात उनके मन में गहराई तक बैठ जाती है कि पुरुष वर्ग हमसे श्रेष्ठ है और फिर वे ताउम्र, चाह कर भी घर के पुरुषों का विरोध नहीं कर पाती हैं और यही उम्मीद वह अपनी बहुओं और बेटियों से भी रखती हैं।

अब इस घर में मेरा दम घुट रहा है अवनि , जिस छत के नीचे मेरी दो मासूम अजन्मी बच्चियाँ बेरहमी से कत्ल कर दी गई, वहाँ मैं अब एक पल भी नहीं रह सकती। मैं हमेषा के लिए यह घर छोड़ कर जा रही हूँ ;जमीन के उस टुकड़े की तलाष मे, जहाँ मैं एक ऐसा घर बना सकूँ जो सही मायने में मेरा और मेरी बेटियों का हो, जहाँ मेरी बेटिया पराई अमानत बन कर नहीं पलें। जिस घर के दरवाजे हर वक्त मेरी बच्चियों के लिए खुले रहें।

मैं नहीं जानती कि मैंने जो कदम उठाया है वो सही है या गलत, बस मुझे इतना पता है कि मैं इस समाज में अपना और अपनी बेटियों का एक स्वतंत्र वजूद कायम करना चाहती हूँ, मैं अपनी बेटियों को सारी जिन्दगी घूँट की ओट में सिसकियाँ भरते हुए नहीं, बल्कि अनन्त आसमान में स्वतंत्र रूप से ऊँची उड़ान भरते हुए देखना चाहती हूँ ।

सदियों से हम मर्यादाओं और सामाजिक वर्जनाओं की भ्रम भरी नींद में सो रही हैं। पर अब हमें जागना होगा अवनि, ताकि हमारी बेटियाँ खुली हवा में साँस ले सकें, कामयाबी की ऊँची उड़ान भर सकें। ताकि समाज के कथित ठेकेदार हमारी आगामी पीढ़ी को रुढियों के पिंजरे मे कैद न कर सकें ,परम्पराओं के नाम पर उनका शोषण न कर सके ।

अवनि, आज मैं अपनी दोनों बेटियों के साथ सारी

ISSN:2583-8849

परम्पराओं और सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ कर जा रही हूँ। लेकिन मैं लौट कर जरूर आऊँगी। तब, जब बेटी, बहू और पत्नी से अलग मेरी एक स्वतंत्र पहचान बन जाएगी ।

क्योंकि मैं इस समाज को, एक बेटे के लिए पाचँ-पाँच बेटियों की लाईन लगा देने वाले मेरे नादान माता-पिता को और मेरी दो मासूम बच्चियों को कोख मे ही कत्ल कर देने वाले मेरे जल्लाद पति और सास-ससुर को दिखा देना चाहती हूँ कि यदि बेटियों के बढ़ते हुए कदमों को समाजिक वर्जनाओं की बे़डियों में न जकड़ा जाए तो वे बेटों से भी आगे निकल सकती हैं।

तुम्हारे सहयोग की आषा में,

- तुम्हारी सलोनी"

पत्र समाप्त होते-होते मेरा चेहरा आंसुओं से तरबतर हो चुका था। और मेरे होट स्वतः ही बुदबुदा उठे, सचमुच हमें जागना होगा सलोनी ताकि बेटियाँ होने के कारण हमें जिन अधिकारों से वंचित रखा गया, वे हम अपनी बेटियों को मुहैया करा सकें , ताकि हमारी कोख की कलियाँ खुल कर खिल सके।